Vol 6 Issue 12 Jan 2017

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2230-7850
IMPACT FACTOR : 4.1625(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | JANUARY - 2017

'हिन्दी के विकास में जनसंचार माध्यमों का योगदान'

डॉ. ईश्वर सिंह सागवाल
ऐसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी),
बाबू अनन्तराम जनता महाविद्यालय,
कौल (कैथल)

प्रस्तावना :

आज का युग सूचना तथा संचार क्रान्ति का युग है । संचार माध्यमों के विकास के साथ हिन्दी में आशातीत विकास हुआ है । आज हिन्दीतर प्रदेशों में भी प्रायः हिन्दी बोली और समझी जाती है । ऐसा जनसंचार माध्यमों के कारण ही सम्भव हो पाया है अन्यथा हिन्दी को सुदृढ़ करने के प्रयास तो आज भी हिन्दी दिवस, हिन्दी समारोह तक ही सीमित है । संचार माध्यमों के कारण हिन्दी भाषा बड़ी तेजी से तत्समता से सरलीकरण की ओर जा रही है । इससे उसे अखिल भारतीय ही नहीं, वैश्विक स्वीकृति प्राप्त हो रही है ।

भूमंडलीकरण के इस दौर में जनसंचार माध्यमों ने हिन्दी के सामर्थ्य में वृद्धि की है । संचार माध्यम की भाषा के रूप में प्रयुक्त होने पर हिन्दी समस्त ज्ञान–विज्ञान और आधुनिक विषयों से सहज ही जुड़ गई है । राष्ट्रीय ही नहीं विविध अन्तर्राष्ट्रीय चैनलों में हिन्दी आज सब प्रकार के आधुनिक संदर्भो को व्यक्त करने के अपने सामर्थ्य को विश्व के समक्ष प्रमाणित कर रही है । 21वीं सदी की व्यावसायिकता जब हिन्दी को केवल शास्त्रीय भाषा कहकर इसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिन्ह लगाने लगी तब इस समर्थ भाषा ने न केवल अपने अस्तित्व की रक्षा की, वरन् इस घोर व्यावसायिक युग में संचार की तमाम प्रतिस्पर्धाओं को लॉघ अपनी गरिमामयी उपस्थिति भी दर्ज करवाई । जनसंचार के सबसे सशक्त माध्यम सिनेमा और टेलिविजन ने हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में वैश्विक क्रान्ति दी है । आज हर कोई हिन्दी बोल एवं समझ लेता है, लिख–पढ़ भले न पाए ।

विज्ञापन की दुनियां में हिन्दी का बोलबाला है । विज्ञापन की दुनियॉ का हिन्दी के बगैर काम नहीं चलता । विज्ञापन गुरु यह जान और मान चुके हैं कि माल अगर बेचना है तो उन्हें हिन्दी में ही बाजार में उतरना पड़ेगा । लेकिन ये जो हिन्दी परोसी जा रही है उसे कुछ लोग 'हिंगलिश' की संज्ञा देते है, परन्तु यह सर्वग्राह्या है । आज बाजारवाद पूर्ण शबाब पर हैं । उत्पादक तरह–तरह से उपभोक्ताओं को लुभाने का प्रयास करते हैं । ऐसे में विज्ञापन की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है । दिन–रात समाचार चैनल, एम.एफ. रेडियों और विज्ञापन ऐजेंसियॉ की बाढ़ में बिना लाग लपेट बेबाक और संक्षिप्त शब्दों में पूरी रचनात्मकता वाली हिन्दी का ही बाजार है । इंटरनेट पर भी हिन्दी का अभूतपूर्व विकास हो रहा है । इंटरनेट पर हिन्दी की कई बेबसाइटे है । हिन्दी के कई अखबार नेट पर उपलब्ध है । कई साहित्यिक पत्रिकाएं नेट पर पढ़ी जा सकती है । हिन्दी में ब्लॉग लेखक आज अच्छी रचनाएं दे रहे है ।

आज के प्रौधागिकी के दौर में मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में उभरा है और उसमें भी न्यू मीडिया यानि बेब–मीडिया के प्रति लोगों का आकर्षण प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । भूमंडलीकरण के दौर में मीडिया का दायरा काफी विस्तृत हो चुका है । ऐसे में विभिन्न भाषाओं का विकास भी वेब मीडिया के तहत ही हो रहा है । आज की स्थिति में वेब और भाषा एक दूसरे के अहम सहयोगी माने जा सकते हैं । भारत जैसे विशाल देश में जहॉ व्यापक क्षेत्र में हिन्दी बोली जाती है वहॉ इसके विकास में वेब मीडिया के योगदान को नजरअदांज नहीं किया जा सकता । ये सच है कि वेब के असर से हिन्दी के स्वरूप में इसके मूल स्वरूप से भिन्नता है, लेकिन यही भिन्नता ही इस विकास की गाड़ी के पहिये हैं । एक विस्तृत दायरे के साथ हिन्दी अपने आप में व्यापक है । वेब मीडिया के प्रयोगों के वाबजूद हिन्दी के अस्तित्व पर कोई संकट नहीं है । दूसरी भाषाओं के कुछ शब्दों के प्रयोग से ही हिन्दी वेब लायक बनी अन्यथा अपने इस स्वरूप में हिन्दी एक दायरे तक सीमित होकर रह जाती ।

हिन्दी भाषा विकास को केन्द्र में रखकर भारत सरकार की ओर से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं । भारत सरकार की ओर से आयोजित कार्यक्रमों को आम जनता तक पहुॅचाने में नए जनसंचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका हैं । अपने उद्भव काल से ही जनसंचार माध्यमों ने लोक शिक्षक की भूमिका में ही अपना कार्य जारी रखा है । इसे मानना होगा कि 21 वीं सदी का जनसंचार हमारे जीवन तथा राष्ट्रीय विकास और उसकी दिशा निर्धारण का एक अभिन्न अंग बन चुका है । प्रातः होते ही अधिकतर लोग समाचार पत्र पढ़ने में व्यस्त हो जाते है तो सुदूर गांवों के कुछ लोग रेडियों खोल लेते है, कुछ अन्य लोग दूरदर्शन पर ऑख–कान लगाए बैठ जाते है । इन विविध माध्यमों से हम राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, खेलकूद आदि से

सम्बन्धित गतिविधियों के समाचारों के अतिरिक्त विविध प्रकार के मनोरंजन का लाभ उठाते है । इन माध्यमों से प्रसारित विभिन्न विज्ञापन हेतू उपरोक्त संस्कृति से अनायास ही जोड़े रखते है । सच तो यह है कि जनसंचार के इन विभिन्न माध्यमों ने व्यक्ति से लेकर जन–समूह तक तथा एक देश से लेकर विश्व के विभिन्न देशों को एक सूत्र में बॉध दिया है । इस बन्धन के परिणामस्वरूप जनसंचार माध्यम राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर चिंतन, विचार, राजनीति, अर्थ, संस्कृति आदि के क्षेत्र में सम्मिलित प्रभाव डालने लगे हैं और उनमें विश्व का मानचित्र बदलने की क्षमता विकसित हो चुकी है । जनसंचार का उद्देश्य है, विविध प्रकार के भावों, विचारों तथा जानकारियों को अधिकाधिक लोगों तक पहुॅचाना1 कहना आवश्यक नहीं कि नए जनसंचार माध्यमों ने विविध प्रकार के भावों, विचारों और जानकारियों का आदान–प्रदान सफलतापूर्वक किया हैं।

अब तक जनसंचार माध्यमों को हम दृश्य, श्रव्य और दृश्य–श्रव्य इन प्रमुख तीन वर्गों में रखकर देख रहे थे । दृश्य–श्रव्य माध्यमों के अन्तर्गत नए जनसंचार माध्यमों का विकास हो रहा है । 'दृश्य या लिखित जनसंचार माध्यम जिसमें समाचार–पत्र, पत्रिकाएॅ, पोस्टर, पैम्पलेट, होर्डिंग आदि की गणना की जाती है । श्रव्य जनसंचार माध्यम जिसमें रेडियों, ट्रांजिस्टर, आडियों कैसेट, टेलिफोन, मोबाइल फोन आदि ।'[2] इन सभी आधुनिक जनसंचार माध्यमों के अतिरिक्त वर्तमान में हिन्दी भाषा विकास में नए संचार माध्यम अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते नजर आते है । आज नए जनसंचार माध्यमों ने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संक्रमण को बढ़ाने के साथ–साथ हिन्दी भाषा के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । इसे नकारा नहीं जा सकता । जिनमें कम्प्यूटर, इंटरनेट, उपग्रह संचार प्रणाली, केबल, मल्टीमीडिया, क्षेत्रीय चैनल, डी.टी.एस.–सेवा, विदेशी सेवा प्रभाग, ब्लॉग, हिन्दी–बेबसाइट्स, ई–मेल, ब्रॉड–कास्ट, वेबकास्ट, सोशल नेटवर्किंग, साइट्स–फेसबक, आरकुट, गुगल प्लस आदि । जागरण डॉटकॉम, अमर उजाला डॉटकॉम, भास्कर डॉटकॉम, वेबदुनिया डॉटकॉम, प्रभात खबर डॉटकॉम, तहलका डॉटकॉम का विचार करेगें तो 1997 से आज तक ऐसे अनेक वेबपेज मिलते हैं, जिनके कारण हिन्दी दैनिकों का स्तर ऊचॉ होता गया । हिन्दी वेब पत्रकारिता नए जनसंचार माध्यमों में अपना अलग स्थान बना चुकी है । आज विश्व मीडिया की नजर हिन्दी वेब पत्रकारिता पर है , इसमें सन्देह नहीं । वेब पत्रकारिता को हम इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, सायबर पत्रकारिता आदि नाम से जानते हैं । जैसा कि वेब पत्रकारिता नाम से स्पष्ट है यह कम्प्यूटर और इन्टनेट के सहारे संचालित ऐसी पत्रकारिता है जिसकी पहुॅच किसी एक पाठक, एक गांव, एक प्रखंड, एक प्रदेश, एक देश तक नहीं, बल्कि समूचे विश्व तक है और जो डिजिटल तरंगों के माध्यम से प्रदर्शित होती है । वेब मीडिया सर्वव्यापकता को भी चरितार्थ करती है, जिसमें खबरे दिन को चौबीस घन्टें और हफ्ते के सातों दिन उपलब्ध रहती हैं ।[3]

हिन्दी भाषा विकास में नए जनसंचार माध्यमों में वेब मीडिया का योगदान भी महत्त्वपूर्ण रहा है । हिन्दी भाषा शिक्षण का प्रचार–प्रसार वर्तमान काल में नए जनसंचार माध्यमों के कारण गतिमान बन रहा है । आकाशवाणी से लेकर स्थानीय रेडियों स्टेशन, सामुदायिक रेडियों स्टेशन, एफ.एम. रेडियों, डी.टी.एप. सेवा, विदेशी सेवा प्रभात, डी.डी. के सभी चैनल हिन्दी भाषा के विविध आयाम जनता के सामने रहे है । बी.बी.सी. हिन्दी ऑनलाइन की सम्पादिका सलमा जैदी कहती है, वेबजर्नलिज्म प्रिंट का ही विकसित रूप माना जाता है । यहॉं लिखने और छपनें के स्टाइल में फर्क जरूर होता है । यहॉं वाक्य छोटे, सरल और आसानी से पढ़े जा सकने वाले शब्दों के इस्तेमाल के साथ लिखे जाते हैं । यहा पैराग्राफ संग्राम छोटे होते है और खबर की भाषा ऐसी होती है जिसे लोग सहजता से समझ सके ।[4] कहना सही होगा कि नए जनसंचार माध्यमों में वेब का करिश्मा सरल भाषा के लिए अपना प्रभाव बना रहा है । अक्षर सॉफ्टवेयर से हिन्दी में शब्द संसाधन की शुरूआत मानी जाती है जो दिन व दिन विकसित होती गयी । अब हिन्दी के साथ–साथ सभी भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर का प्रयोग आसान बन गया है । युनी कोड के कारण अब हिन्दी–भाषा का इन्टरनेटीय रूप ज्ञानवर्धक दृष्टिगोचर होता हैं। कम्प्यूटर पर हिन्दी और अंग्रेजीं दोनों में काम करने के लिए तीन विकल्प उपलब्ध है– इनमें पहला है सामान्य कार्यों वाले सॉफ्टवेयर, आई.बी.एन. पी.सी. कम्प्यूटर पर द्विभाषी शब्द संसाधन के कई पैकेज बाजार में मिलते है । दूसरा विकल्प बहु–उपयोगी सॉफ्टवेयर का है । एम.एस. डॉस आधारित सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल हो सकता है । तीसरा विकल्प 'भाषा' नामक एक बहुभाषी शब्द संसाधन है जिसका आई.बी.एम. और समकक्ष कम्प्यूटरों पर उपयोग हो सकता है ।[5]

हिन्दी भाषा विकास के कम्प्यूटर प्रयोग में नए जनसंचार माध्यम अग्रणी हैं । इसे नकारा नहीं जा सकता । इन दिनों नए जनसंचार माध्यमों में ब्लॉग अपनी अलग भूमिका निभा रहा है । 'वर्ष 2003 में ब्लॉग की दुनिया में हिन्दी का प्रवेश हुआ और आज बड़ी संख्या में हिन्दी ब्लॉग भी पढ़े और पढ़ाए जा रहे है ।'[6] सन् 1997 से लेकर 2010 तक ब्लॉगीग इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि दुनिया भर के अनेक साहित्यकार अब हिन्दी भाषा में ब्लॉग लिख रहे हैं । अपनी बात को इस नए जनसंचार के माध्यम के जरिए लोगों तक पहुॅचा रहे है । इन्टरनेट के कारण नए जनसंचार माध्यम हिन्दी भाषा विकास के लिए सही दिशा में कदम बढ़ा रहे है ।

हमारा भारतीय प्रौद्योगिकी विकास आज अपने शीर्ष पर हैं । हमारी जनसंचार प्रणाली पहले से बेहतर और लगातार बेहतर होती जा रही है । इस विकास की कड़ी को जुडने में एक लम्बा वक्त लगा है । सरकारें आती रही और जाती रही लेकिन भारतीय जनसंचार और प्रौद्योगिकी अपने विकास के पहिये को घूमाती रही ।[7] नए जनसंचार माध्यमों में सर्वाधिक शक्तिशाली सूचना माध्यम के रूप में इन्टरनेट का उल्लेख करना होगा । इंटरनेट के माध्यम से जो हिन्दी का विकास हो रहा है वह सराहनीय है । वेब मीडिया इंटरनेट के कारण ही आज लोकप्रिय बन रहा है । स्कुल ऑफ जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया स्टडीज, नई दिल्ली के प्रोफेसर सुभाष धुलिया का मत है, ''प्रौद्योगिकी युग में आज लगभग सभी समाचार पत्र–पत्रिकाएॅ, रेडियों और टेलिविजन चैनल्स ऑनलाइन हो रहे है । आज समाचार चैनलों पर दिखाए जाने वाली खबरों और प्रोग्रामों का इंटरनेट वर्जन मौजूद है और इसी तरह सभी समाचार पत्र–पत्रिकाएॅ भी वेब पत्रिकारिता की दुनिया में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है । इंटरनेट उपभोक्ताओं की तेजी से बढ़ती संख्या इसी ओर इशारा कर रही है कि अगले कुछ वर्षों में वेब मीडिया कही अधिक प्रभावशाली मंच बनने की ओर उन्मुख है । हालांकि पश्चिमी देशों में काफी हद तक यह पहले ही हो चुका है । नई प्रौद्योगिकी से समाचार मीडिया में भी आमूलचूल परिवर्तन हुए है, साथ ही इसके विस्तार की गहराई और व्यापकता भी बेमिसाल है ।[8] अतः नए जनसंचार माध्यम भले ही व्यवसायवृत्ति के अनुसार विकास की ओर चल रहे है, उनका उद्देश्य जन हित का ही रहा है । इसे मानना होगा ।

आज जनसंचार के अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है । उसमें प्रमुख है भाषायी चुनौती । भाषायी चुनौती का सामना करने के लिए नए जनसंचार माध्यम अब विभिन्न सॉफ्टवेयर्स टूल्स का निर्माण कर भाषा विकास खासकर हिन्दी भाषा विकास की ओर ध्यान दे रहे हैं । केवल देवनागरी लिपि का कम्प्यूटर विकास ही हिन्दी का विकास नहीं है बल्कि हिन्दी का सम्पूर्ण कम्प्यूटरी विकास होना जरूरी बन गया है, जो नए जनसंचार माध्यम इस सम्पूर्ण कम्प्यूटरी विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है । हिन्दी कम्प्यूटरी का विकास हिन्दी में विकास की गति और दिशा निश्चित करेगा । इस समय हिन्दी के सम्मुख वैसा ही अवसर उपस्थित है जैसा 20 वीं सदी के आरम्भ में था । यदि हम सब हिन्दी कम्प्यूटरी का समुचित प्रबन्धन कर सके तो यह हिन्दी के तीव्रतम विकास का एक नया काल सिद्ध हो सकता है ।[9] यह कहना उचित होगा कि नए जनसंचार माध्यमों के कारण हिन्दी का कम्प्यूटरी विकास अब तेजी से हो रहा है । नए जनसंचार माध्यमों की भूमिका का हमें स्वागत करना होगा । अनेक चुनौतियों के कारण भले ही कम्प्यूटरी हिन्दी का सम्पूर्ण विकास नहीं हुआ हो पर इन्टरनेट पर अब हिन्दी का प्रयोग दिन–ब–दिन बढ़ रहा है । इस बात हम नकार नहीं सकते ।

जनसंचार माध्यमों के लिए आजकल जिस भाषा का प्रयोग किया जा रहा है वह साहित्यिक भाषा नहीं है वरन् सामान्य व्यवहार / बोलचाल की भाषा है । विज्ञापन के लिए भी एक विशिश्ट भाषा को विकसित कर लिया जाता है? जो अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अपने रूप को भी परिवर्तित कर लेती हैं । भाषा अभिव्यक्ति का एक सबल और सशक्त माध्यम है । इसी कारण से भारत जैसे विशाल हिन्दी समुदाय वाले देश में हिन्दी जनसंचार का सबसे

सीधा, सरल एवं सुबोध साधन सिद्ध होता जा रहा है ।[10] नए जनसंचार माध्यम आम जनता में बोली जाने वाली हिन्दी भाषा में व्यवहार कर रहे है । अतः सामान्यजनों का रूझान हिन्दी भाषा के प्रयोग के प्रति बढ़ रहा है । हम जानते है कि इंटरनेट पर सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाली पहली दस भाषाओं में हिन्दी को स्थान नहीं मिला है, लेकिन नए जनसंचार माध्यमों के प्रयासों से भविष्य में हिन्दी का स्थान निश्चित होगा । इसमें कोई दो राय नहीं ।

कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग की बढ़ती सम्भानाओं को ध्यान में रखकर इलैक्ट्रोनिकी विभाग के भारतीय भाषाओं के लिए 'टैक्नोलॉजी विकास' नामक परियोजना के अन्तर्गत कई प्रोजैक्ट शुरु कर दिए है । किसी भी प्रजातन्त्र और सरकारी अथवा निजी संगठन में जनभाषा का सम्मान करना फलप्रद होता हैं । सरकारी कामकाज में पारदर्शिता लाने के लिए सूचनाओं का माध्यम जनभाषा होना जरूरी है । इंटरनेट प्रणाली के महाशक्तिशाली तन्त्र में भाषा का अपना विष्टि स्थान होता है । भाषा प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत इलैक्ट्रानिक्स के माध्यम से भाषा–शिक्षण के उपकरणों का विकास आदि सन्निहित हैं ।[11] हिन्दी–अंग्रेजीं भाषा के सम्मिश्रण से हिन्दी भाषा का हिंग्लिशी जनसंचार माध्यमों द्वारा हो रहा है, इस आरोप का खंडन होना अनिवार्य है । इस आरोप में तथ्य नहीं है । सभी भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अब माध्यम तज्य आवश्यक मानते है । इस बात से हिन्दी विद्वानों को सहमत होना होगा । मानक हिन्दी का प्रयोग नए जनसंचार माध्यम अपनी तरफ से करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं । फिर भी त्रुटियां रह जाती है । त्रुटियों को दूर करने के लिए सभी स्तर पर प्रयास होना अनिवार्य है ।

उपरोक्त सभी ऑनलाइन औजार यूँ तो प्रत्यक्ष से कोई बड़ी भूमिका में न रहे हो, परन्तु हिन्दी के समग्र विकास में इनकी सहायता से इंकार नहीं किया जा सकता है । भारत जैसे देश में जहां महज 10 प्रतिशत से भी कम लोग अंग्रेजीं का ज्ञान रखते हैं, वहां हिन्दी के इस स्वरूप की आवश्यकता बढ़ जाती है । हिन्दी के इसी महत्त्व पर मशहूर विचारक सच्चिदानन्द सिन्हा ने लिखा है–''भाषा जो प्रतीकों का समुच्चय होती है, संस्कृतियों के सम्बलन और सम्प्रेषण का सबसे सरल माध्यम होती है और सम्प्रेषण आम बोलचाल की भाषाओं से भी होता है बल्कि अधिक सशक्त रूप से,'' यहॉ सम्प्रेषण के एक और सशक्त माध्यम 'वेब मीडिया' का भी उल्लेख किया गया है । वेब मीडिया एक ऐसा गुरुकुल है जहां प्रत्येक भाषा एक संकाय की भान्ति प्रतीत होती है । इलैक्ट्रानिक संचार–माध्यम और कम्प्यूटर आदि के उपयोग में हिन्दी ने अपनी जगह बना ली है । इससे एक तरफ इन माध्यमों से हिन्दी का प्रसार हो रहा है , तो दूसरी तरफ हिन्दी का अपना बाजार भी बन रहा है । इससे हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका मजबूत हो रही है । कुछ इन्ही बातों को ध्यान में रखकर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा था–''यदि भारत को समझना है तो हिन्दी सीखों ।'' इस प्रकार अन्त में यही कहना होगा कि हमें जनसंचार माध्यमों का सच में धन्यवाद करना होगा । जिन्होंने हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दी है । हम उनसे 'अज्ञेय' वाली हिन्दी की उम्मीद रखें तो भूल हमारी ही हैं । हॉ संचार माध्यमों को भी अपनी जिम्मेदारी समझते हुए असाधु भाषा के प्रसार से बचना चाहिए । जहां तक 'बाजार की हिन्दी' और 'बाजारू हिन्दी' की बात है तो यही कहा जाएगा 'गुड़ खाए और गुलगुले से परहेज' ।

1.डॉ. महेन्द्र सिंह राणा– प्रयोजन मूलक हिन्दी के आधुनिक आयाम, पृ.सं. 235–236 ।
2.डॉ. महेन्द्र सिंह राणा–प्रयोजन मूलक हिन्दी के आधुनिक आयाम, पृ.सं. 237 ।
3.संपादक हंसराज 'सुमन', एस. विक्रम–वेब पत्रकारिता, पृ. सं. 15
4.सौरभ शुक्ल– नए जमाने की पत्रकारिता, पृ.सं. 114 ।
5.सम्पादक डॉ. शशि भारद्धाज– भाषा (द्वैमासिक), मई–जून 2002, पृ.सं. 258–259 ।
6.श्याम माथुर–वेब पत्रकारिता, पृ.सं. 63
7.सम्पादक इरशाद अली–कम्प्यूटर मंत्रा(मासिक), जनवरी, 2013, पृ.सं. 64 ।
8.सम्पादक शालिनी जोशी–वेब पत्रकारिता, नया मीडिया नये रूझान, पृ.सं. 8 ।
9.सम्पादक आर.अनुराधा– न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषायी चुनौतियॉ और सम्भावनाऍ, पृ.सं. 70 ।
10.www.news24×7.in /moreabhivakti.asp
11.www.khas.khsindia.org/hindi

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

* International Scientific Journal Consortium
* OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org